गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान,

गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा) - 125001

कार्यक्रम एवं गतिविधियां – 2025

जैन गुरु सुदर्शन जी महाराज की पुण्य तिथि पर व्याख्यान

एवं

जैन गुरु सुदर्शन साहित्य कार्नर की स्थापना

दिनांक - 25 अप्रैल, 2025 **स्थान** - गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान परिसर

मुख्य अतिथि - प्रो. नरसी राम बिश्नोई, माननीय कुलपति, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

अध्यक्षता -- प्रो. किशनाराम बिश्नोई, विभागाध्यक्ष, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

नव शैक्षणिक सत्र के शुभारंभ पर वैदिक यज्ञ, जम्भवाणी का पाठ एवं सिंधु जल कलश स्थापना

दिनांक - 03 जुलाई, 2025

मुख्य यजमान - प्रो. नरसी राम बिश्नोई, माननीय कुलपति, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

अध्यक्षता - डॉ. विजय कुमार, कुलसचिव, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

निदेशक - प्रो. एन. के. बिश्नोई, अधिष्ठाता, धार्मिक अध्ययन संकाय

संयोजक - प्रो. किशनाराम बिश्नोई, विभागाध्यक्ष, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

आयोजन सचिव - डॉ. रामस्वरूप, सहायक प्रोफेसर, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

सिंधु नदी पवित्र व पुरानी नदी : प्रो. नरसीराम बिश्नोई

नभ-छोर न्यूज ▶▶ 03 जुलाई

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि सिंधु नदी केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि ज्ञान, आस्था और संस्कृति की धारा है। आज जब विश्व पर्यावरण संकट, जल प्रदूषण और सांस्कृतिक विघटन की समस्याओं से जूझ रहा है।ऐसे में सिंधु दर्शन हमें प्रकृति और संस्कृति के बीच सामंजस्य की प्रेरणा देते हैं तथा जल संरक्षण, सतत विकास व सांस्कृतिक चेतना का संदेश देते हैं।कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई आज गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के सौजन्य से नये शैक्षणिक सत्र 2025-26 के शुभारंभ पर हुए 'जाम्भवाणी हवन' व 'सिंधु जल कलश स्थापना' अनुष्ठान के अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में संबोधित किया। अनुष्ठान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. विजय कुमार ने की। इस अवसर पर गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष डा. किशनाराम बिश्नोई उपस्थित रहे।

प्रो. बिश्नोई ने बताया कि विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

में उनके स्वयं के द्वारा सिंधु नदी से लाए गए पवित्र जल के कलश की स्थापना की गई है। उन्होंने कहा कि सिंधु नदी भारत के इतिहास की सबसे पुरानी व पवित्र नदी है। वेदों व पुराणों में इसका उल्लेख मिलता है। सिंधु नदी के इतिहास के बिना भारत के इतिहास की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी नदी के किनारे हमारी वैदिक संस्कृति पनपी है।तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई है।लगभग 3000 किलोमीटर लम्बी इस नदी के परिदृश्य को लद्दाख में देखने से दिव्य अनुभव की अनुभूति होती है। उन्होंने कहा कि नई ऊर्जा और उत्साह के साथ हम नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ कर रहे हैं। नई योजनाओं और नए कोर्सों के साथ विश्वविद्यालय में इस वर्ष लगभग 10000 विद्यार्थी होंगे। यह हमारे लिए एक नया अनुभव और जिम्मेदारी होगी। कुलसचिव डा. विजय कुमार ने भी नए शैक्षणिक सत्र के शुभारंभ के अवसर पर 'जाम्भवाणी हवन' व 'सिंधु जल कलश स्थापना' अनुष्ठान पर विश्वविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर उपस्थित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, अधिकारी, कर्मचारी व इनके परिजनों को भी सिंधु नदी के पवित्र जल के लघु कलश दिए गए। जाम्भवाणी व हवन यज्ञ का संचालन नेकी राम बिश्नोई ने किया। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के ध्वज का रोहण भी किया। इस अवसर पर पौधारोपण अभियान भी चलाया गया।

सिंधु नदी केवल एक जलधारा नहीं बल्कि ज्ञान, आस्था व संस्कृति की है धारा : नरसी

नए शैक्षणिक सत्र के शुभारंभ पर किया सिंधु जल कलश स्थापना अनुष्ठान

जागरण संवाददाता • हिसार : गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि सिंधु नदी केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि ज्ञान, आस्था और संस्कृति की धारा है। आज जब विश्व पर्यावरण संकट, जल प्रदूषण और सांस्कृतिक विघटन की समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे में सिंधु दर्शन हमें प्रकृति और संस्कृति के बीच सामंजस्य की प्रेरणा देते हैं तथा जल संरक्षण, सतत विकास व सांस्कृतिक चेतना का संदेश देते हैं।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई वीरवार को गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के सौजन्य से नये शैक्षणिक सत्र 2025-26 के शुभारंभ पर हुए 'जाम्भवाणी हवन' व 'सिंधु जल कलश स्थापना' अनुष्ठान पर मुख्य यजमान के रूप में अपना संबोधन दे रहे थे। अनुष्ठान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. विजय कुमार ने की। इस दौरान गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष डा. किशनाराम बिश्नोई उपस्थित रहे।

गुजविप्रौवि हिसार में सिंधु जल कलश की स्थापना करते कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई • डीआरओ

कुलपति ने दी शुभकामनाएं

कुलसचिव डा. विजय कुमार ने भी नए शैक्षणिक सत्र के शुभारंभ के अवसर पर 'जाम्भवाणी हवन' व 'सिंधु जल कलश स्थापना' अनुष्ठान पर विश्वविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं और बधाई दी। इस दौरान उपस्थित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, अधिकारी, कर्मचारी व इनके परिजनों को भी सिंधु नदी के पवित्र जल के लघु कलश दिए गए। जाम्भवाणी व हवन यज्ञ का संचालन नेकी राम बिश्नोई ने किया।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में उनके स्वयं के द्वारा सिंधु नदी से लाए गए पवित्र जल के कलश की स्थापना की गई है। उन्होंने कहा कि सिंधु नदी भारत के इतिहास की सबसे पुरानी व पवित्र नदी है। वेदों व पुराणों में इसका उल्लेख मिलता है। सिंधु नदी के इतिहास के बिना भारत के इतिहास की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी नदी के किनारे हमारी वैदिक संस्कृति पनपी है। तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई है। लगभग 3000 किलोमीटर लंबी इस नदी के परिदृश्य को लद्दाख में देखने से दिव्य अनुभव की अनुभूति होती है। उन्होंने कहा कि नई ऊर्जा और उत्साह के साथ हम नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ कर रहे हैं। नई योजनाओं और नए कोर्सों के साथ विश्वविद्यालय में इस वर्ष लगभग 10,000 विद्यार्थी होंगे। यह हमारे लिए नई जिम्मेदारी होगी।

सिंधु नदी केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि ज्ञान और संस्कृति की धारा : प्रो. बिश्नोई

शैक्षणिक सत्र के शुभारंभ पर जाम्भवाणी हवन व सिंधु जल कलश स्थापना अनुष्ठान

भास्कर न्यूज | हिसार

जीजेयू के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि सिंधु नदी केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि ज्ञान, आस्था और संस्कृति की धारा है। विश्व पर्यावरण संकट, जल प्रदूषण और सांस्कृतिक विघटन की समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे में सिंधू दर्शन हमें प्रकृति और संस्कृति के बीच सामंजस्य की प्रेरणा देते हैं तथा जल संरक्षण, सतत विकास व सांस्कृतिक चेतना का संदेश देते हैं। उन्होंने गुरुवार को गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के सौजन्य से नये शैक्षणिक सत्र 2025-26 के शुभारंभ पर हुए जाम्भवाणी हवन व सिंधु जल कलश

हवन में उपस्थित मुख्य यजमान कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई।

स्थापना अनुष्ठान पर मुख्य यजमान के रूप में सम्बोधन दे रहे थे। अनुष्ठान की अध्यक्षता विवि के कुलसचिव डॉ. विजय कुमार ने की। इस अवसर पर गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष डॉ. किशनाराम बिश्नोई उपस्थित रहे।

इस अवसर पर उपस्थित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, अधिकारी, कर्मचारी व इनके परिजनों को भी सिंधु नदी के पवित्र जल के लघु कलश दिए गए। जाम्भवाणी व हवन यज्ञ का संचालन नेकी राम बिश्नोई ने किया। इस अवसर पर पौधरोपण अभियान चलाया गया। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई व कुलसचिव डॉ. विजय कुमार ने पौधे रोपित कर पौधरोपण अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर प्रसाद वितरण किया गया।

गुजविप्रौवि के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में हुआ जाम्भवाणी हवन व सिंधु जल कलश स्थापना अनुष्ठान का आयोजन

सिंधु नदी के इतिहास के बिना भारत के इतिहास की कल्पना नहीं की जा सकती : प्रो. नरसी राम बिश्नोई

चिराग टाइम्स न्यूज

फरीदाबाद, । गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि सिंधु नदी केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि ज्ञान, आस्था और संस्कृति की धारा है। आज जब विश्व पर्यावरण संकट, जल प्रदूषण और सांस्कृतिक विघटन की समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे में सिंधु दर्शन हमें प्रकृति और संस्कृति के बीच सामंजस्य की प्रेरणा देते हैं तथा जल संरक्षण, सतत विकास व सांस्कृतिक चेतना का संदेश देते हैं। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई गुरुवार को गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के सौजन्य से नये शैक्षणिक सत्र 2025-26 के शुभारंभ पर हुए %जाम्भवाणी हवन% व %सिंधु

जल कलश स्थापना% अनुष्ठान के अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में अपना सम्बोधन दे रहे थे। अनुष्ठान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. विजय कुमार ने की। इस अवसर पर गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष डा. किशनाराम बिश्नोई उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में उनके स्वयं के द्वारा सिंधु नदी से लाए गए पवित्र जल के कलश की स्थापना की गई है। उन्होंने कहा कि सिंधु नदी भारत के इतिहास की सबसे पुरानी व पवित्र नदी है। वेदों व पुराणों में इसका उल्लेख मिलता है। सिंधु नदी के इतिहास के बिना भारत के इतिहास की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी नदी के किनारे हमारी वैदिक संस्कृति पनपी है। तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई है। लगभग 3000 किलोमीटर लम्बी इस नदी के परिदृश्य को लद्दाख में देखने से दिव्य अनुभव की अनुभूति होती है। उन्होंने कहा कि नई ऊर्जा और उत्साह के साथ हम नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ कर रहे हैं। नई योजनाओं और नए कोर्सों के साथ विश्वविद्यालय में इस वर्ष लगभग 10000 विद्यार्थी होंगे। यह हमारे लिए एक नया अनुभव और जिम्मेदारी होगी। गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के सिद्धांतों पर चलते हुए हम निरंतर नए आयामों को छू रहे हैं।

कुलसचिव डा. विजय कुमार ने भी नए शैक्षणिक सत्र के शुभारंभ के अवसर पर जाम्भवाणी हवन व सिंधु जल कलश स्थापना अनुष्ठान पर विश्वविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं और बधाई दी। इस अवसर पर उपस्थित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, अधिकारी, कर्मचारी व इनके परिजनों को भी सिंधु नदी के पवित्र जल के लघु कलश दिए गए। जाम्भवाणी व हवन यज्ञ का संचालन नेकी राम बिश्नोई ने किया। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के ध्वज का रोहण भी किया। इस अवसर पर पौधारोपण अभियान भी चलाया गया। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई व कुलसचिव डा. विजय कुमार ने पौधे रोपित कर पौधारोपण अभियान की शुरूआत की। इस अवसर पर प्रसाद वितरण किया गया।

सिंधु नदी ज्ञान, आस्था और संस्कृति की धारा : बिश्नोई

जीजेयू में सिंधु जल कलश स्थापना अनुष्ठान

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि सिंधु नदी केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि ज्ञान, आस्था और संस्कृति की धारा है। आज जब विश्व पर्यावरण संकट, जल प्रदूषण और सांस्कृतिक विघटन की समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे में सिंधु दर्शन हमें प्रकृति और संस्कृति के बीच सामंजस्य की प्रेरणा देते हैं और जल संरक्षण, सतत विकास व सांस्कृतिक चेतना का संदेश देते हैं।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई गुरुवार को गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के सौजन्य से नए शैक्षणिक सत्र 2025-26 के शुभारंभ पर हुए जम्भवाणी हवन व सिंधु जल कलश स्थापना अनुष्ठान के अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में अपना संबोधन दे रहे थे। अनुष्ठान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. विजय कुमार ने की। इस अवसर पर गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष डॉ. किशनाराम बिश्नोई उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर जी

जीजेयू में हवन में उपस्थित मुख्य यजमान कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई। संवाद

महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में उनके स्वयं के द्वारा सिंधु नदी से लाए गए पवित्र जल के कलश की स्थापना की गई है। सिंधु नदी का वेदों व पुराणों में उल्लेख मिलता है। 3000 किलोमीटर लंबी इस नदी के परिदृश्य को लद्दाख में देखने से दिव्य अनुभव की अनुभूति होती है। उन्होंने कहा कि नई ऊर्जा और उत्साह के साथ हम नए शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ कर रहे हैं। नई योजनाओं और नए कोर्सों के साथ विश्वविद्यालय में इस वर्ष लगभग 10 हजार विद्यार्थी होंगे।

'जाम्भवाणी हवन' व 'सिंधु जल कलश स्थापना' अनुष्ठान का आयोजन

सिंधु नदी ज्ञान, आस्था व संस्कृति की धारा : बिश्नोई

- गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में किया हवन

हरिभूमि न्यूज ▶▶हिसार

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि सिंधु नदी केवल जलधारा नहीं, बल्कि ज्ञान, आस्था और संस्कृति की धारा है।

आज जब विश्व पर्यावरण संकट, जल प्रदूषण और सांस्कृतिक विघटन की समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे में सिंधु दर्शन हमें प्रकृति और संस्कृति के बीच सामंजस्य की

हिसार। हवन में उपस्थित मुख्य यजमान कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई।

प्रेरणा देते हैं तथा जल संरक्षण, सतत विकास व सांस्कृतिक चेतना का संदेश देते हैं। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई गुरुवार को गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के सौजन्य से नये शैक्षणिक सत्र 2025-26 के शुभारंभ पर हुए 'जाम्भवाणी हवन' व 'सिंधु जल कलश स्थापना' अनुष्ठान के अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में अपना सम्बोधन दे रहे थे। अनुष्ठान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. विजय कुमार ने की। संस्थान के अध्यक्ष डा. किशनाराम बिश्नोई उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में उनके स्वयं के द्वारा सिंधु नदी से लाए गए पवित्र जल के कलश की स्थापना की गई है।

पौधरोपण अभियान भी चलाया

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के ध्वज का रोहण भी किया। इस अवसर पर पौधरोपण अभियान भी चलाया गया। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई व कुलसचिव डा. विजय कुमार ने पौधे रोपित कर पौधरोपण अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर प्रसाद वितरण किया गया।

राष्ट्रीय विचार गोष्ठी - विभाजन विभीषिका के मानवीय पहलू

राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, नई दिल्ली

व

हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, पंचकूला के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन।

दिनांक - 12 अगस्त, 2025

मुख्य अतिथि - प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री, उपाध्यक्ष, हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी

अध्यक्षता - प्रो. नरसी राम बिश्नोई, माननीय कुलपति, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

मुख्य वक्ता – अनुराग पुनेठा, मीडिया कंट्रोलर, इंदिरा राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली

विशिष्ठ अतिथि- श्री अनिल पांडेय , डायरेक्टर, इंडिया फ़ॉर चिल्ड्रेनश्

संयोजक - प्रो. किशनाराम बिश्नोई, विभागाध्यक्ष, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

आयोजन सचिव - डॉ. रामस्वरूप, सहायक प्रोफेसर, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

विश्वविद्यालय में विभाजन की विभिषिका के तथ्यों को पढ़ाया जाना चाहिए : कुलदीप

भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखने का लें संकल्प

विश्वविद्यालयों में विभाजन की विभीषिका के तथ्यों को पढ़ाया जाना चाहिए : प्रो. अग्निहोत्री

विवि. में विभाजन की विभिषिका के तथ्यों को पढ़ाया जाना चाहिए : प्रो. कुलदीप अग्निहोत्री

- भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखने का संकल्प लें : प्रो. नरसी राम बिश्नोई।
- विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार में हुई विचार गोष्ठी।

विश्वविद्यालय में आयोजित विचार गोष्ठी में उपस्थित अतिथिगण एवं प्रतिभागी।

गुड़गांव टुडे, हिसार

हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा है कि 1947 में भारत का विभाजन दुनिया की सबसे दुखद व दर्दनाक घटनाओं में से एक है। विभाजन की विभिषिका के 78 साल बाद भी इस विभिषिका का सही से डाक्यूमेंटेशन नहीं हुआ है। भारत के विश्वविद्यालयों में विभाजन की विभिषिका से जुड़े हर तथ्य को पढ़ाया जाना चाहिए। प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान व राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, पंचकुला के संयुक्त तत्वाधान में विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित विचार गोष्ठी को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। विभाजन विभिषिका के मानवीय पहलु विषय पर हुई इस विचार गोष्ठी की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। विवि. के चौधरी रणबीर सिंह सभागार में हुई इस विचार गोष्ठी में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के मीडिया कंट्रोलर अनुराग पुनेठा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि इंडिया फॉर चिल्ड्रन के निदेशक अनिल पांडेय थे। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने अपने सम्बोधन में कहा यह विश्व के इतिहास की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी है। लगभग 1.5 करोड़ लोग अपने ही वतन में शरणार्थी बनकर रह गए। यह विभाजन केवल भौगोलिक विभाजन नहीं था बल्कि दिलों और संस्कृतियों का विभाजन भी था। हमें इस विभाजन से सीख लेनी चाहिए कि धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र के नाम पर कोई विभाजक शक्ति राष्ट्र को फिर से ऐसी विभिषिका में न धकेल दे। हमें नफरत की दीवारों को तोड़कर प्रेम और सद्भाव से रहने तथा भारत की एकता व अखंडता को बनाए रखने का संकल्प लेना चाहिए। मुख्य वक्ता अनुराग पुनेठा ने कहा कि भारत की युवा पीढ़ी को विभाजन की विभिषिका के बारे में जानकारी होनी चाहिए। विस्थापितों में से शायद ही ऐसा कोई हो जिसने कोई न कोई अपना इस त्रासदी में ना खोया हो। स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को इस संबंध में तथ्यपरक जानकारियां पढ़ाई जानी चाहिएं।

विभाजन विभिषिका के तथ्यों को पढ़ाया जाना चाहिए : प्रो. अग्निहोत्री

विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस के उपलक्ष्य पर गुजवि में हुई विचार गोष्ठी

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के कार्यकारी उपाध्यक्ष प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा है कि 1947 में भारत का विभाजन दुनिया की सबसे दुखद व दर्दनाक घटनाओं में से एक है। विभाजन की विभिषिका के 78 साल बाद भी इस विभिषिका का सही से डाक्यूमेंटेशन नहीं हुआ है। भारत के विश्वविद्यालयों में विभाजन की विभिषिका से जुड़े हर तथ्य को पढ़ाया जाना चाहिए। प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान व राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, पंचकुला के संयुक्त तत्वाधान में विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित विचार गोष्ठी को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। विभाजन विभिषिका के मानवीय पहलू विषय पर हुई इस विचार गोष्ठी

विचार गोष्ठी में उपस्थित अतिथिगण एवं प्रतिभागी।

की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। विश्वविद्यालय के चौधरी रणबीर सिंह सभागार में हुई इस विचार गोष्ठी में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के मीडिया कंट्रोलर अनुराग पुनेठा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि इंडिया फॉर चिल्ड्रन के निदेशक अनिल पांडेय थे।

मुख्यातिथि प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा कि ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार भारत का 1857 का स्वतंत्रता संग्राम हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर लड़ा था। 1857 के बाद हिंदू व मुसलमानों को अलग करने की राजनीति शुरू हुई। इसके बावजूद आजादी के समय तक अधिकतर मुसलमान बंटवारे के खिलाफ थे। प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने सवाल किया कि भारत का हिंदू व मुसलमान दोनों ही बंटवारा नहीं चाहते थे, तो फिर ऐसा क्या कारण था कि भारत का विभाजन हुआ। यह वर्तमान में चिंतन का विषय है। इस विषय पर देशवासियों को अवश्य सोचना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस त्रासदी में 10 से 20 लाख लोग मारे गए। उन्होंने सादत हसन मंटो की कहानी का उल्लेख करते हुए बंटवारे से जुड़ी त्रासदी तथा उसके मानवीय पहलुओं का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि आज हम हजारों साल पुरानी सभ्यताओं को तलाशने और उनका डाक्यूमेंटेशन करने पर लगे हैं, लेकिन भारत विभाजन की त्रासदी का सही से डाक्यूमेंटेशन नहीं कर पा रहे हैं।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने अपने सम्बोधन में कहा कि 15 अगस्त 1947 को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का जन्म तो हुआ, लेकिन विश्व के इतिहास की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी भी हुई। लगभग 1.5 करोड़ लोग अपने ही वतन में शरणार्थी बनकर रह गए। यह विभाजन केवल भौगोलिक विभाजन नहीं था बल्कि दिलों और संस्कृतियों का विभाजन भी था। इस त्रासदी को याद करके आज भी रूह कांप जाती है। उन्होंने बताया कि बिश्नोई समाज के बहुत से लोग भी विभाजन के दौरान सीमा पार से आकर भारत में बसे थे। कौन कहां से आया, किसका परिवार अब कहां है, वास्तव में कितने लोग इस विभिषिका में मारे गए, इसका डाक्यूमेंटेशन जरूरी है।

भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखने का संकल्प लें : प्रो. नरसी राम बिश्नोई

विश्वविद्यालय में विभाजन की विभिषिका के तथ्यों को पड़ाया जाना चाहिए : प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के कार्यकारी उपाध्यक्ष प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा है कि 1947 में भारत का विभाजन दुनिया की सबसे दुखद व दर्दनाक घटनाओं में से एक है। विभाजन की विभिषिका के 78 साल बाद भी इस विभिषिका का सही से डाक्यूमेंटेशन नहीं हुआ है। भारत के विश्वविद्यालयों में विभाजन की विभिषिका से जुड़े हर तथ्य को पढ़ाया जाना चाहिए। प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान व राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, पंचकुला के संयुक्त तत्वाधान में विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित विचार गोष्ठी को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। विभाजन विभिषिका के मानवीय पहलू विषय पर हुई इस विचार गोष्ठी की अध्यक्षता

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। विश्वविद्यालय के चौधरी रणबीर सिंह सभागार में हुई इस विचार गोष्ठी में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के मीडिया कंट्रोलर अनुराग पुनेठा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि इंडिया फॉर चिल्ड्रन के निदेशक अनिल पांडेय थे।

मुख्यातिथि प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा कि ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार भारत का 1857 का स्वतंत्रता संग्राम हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर लड़ा था। 1857 के बाद हिंदू व मुसलमानों को अलग करने की राजनीति शुरू हुई। इसके बावजूद आजादी के समय तक अधिकतर मुसलमान बंटवारे के खिलाफ थे। प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने सवाल किया कि भारत का हिंदू व मुसलमान दोनों ही बंटवारा नहीं चाहते थे, तो फिर ऐसा क्या कारण था कि भारत का विभाजन हुआ। यह वर्तमान में चिंतन का विषय है। इस विषय पर देशवासियों को अवश्य सोचना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस त्रासदी में 10 से 20 लाख लोग मारे गए। उन्होंने सादत हसन मंटो की कहानी का उल्लेख करते हुए बंटवारे से जु ड़ी त्रासदी तथा उसके मानवीय पहलुओं का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि आज हम हजारों साल पुरानी सभ्यताओं को तलाशने और उनका डाक्यूमेंटेशन करने पर लगे हैं, लेकिन भारत विभाजन की त्रासदी का सही से डाक्यूमेंटेशन नहीं कर पा रहे हैं।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने अपने सम्बोधन में कहा कि 15 अगस्त 1947 को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का जन्म तो हुआ, लेकिन विश्व के इतिहास की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी भी हुई। लगभग 1.5 करोड़ लोग अपने ही वतन में शरणार्थी बनकर रह गए। यह विभाजन केवल भौगोलिक विभाजन नहीं था बल्कि दिलों और संस्कृतियों का विभाजन भी था। इस त्रासदी को याद करके आज भी रूह कांप जाती है। उन्होंने बताया कि बिश्नोई समाज के बहुत से लोग भी विभाजन के दौरान सीमा पार से आकर भारत में बसे थे। कौन कहां से आया, किसका परिवार अब कहां है, वास्तव में कितने लोग इस विभिषिका में मारे गए, इसका डाक्यूमेंटेशन जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमें नफरत की दीवारों को तोड़कर प्रेम और सद्भाव से रहने तथा भारत की एकता व अखंडता को बनाए रखने का संकल्प लेना चाहिए।

मुख्य वक्ता अनुराग पुनेठा ने कहा कि भारत की युवा पीढ़ी को विभाजन की विभिषिका के बारे में जानकारी होनी चाहिए। विस्थापितों में से शायद ही ऐसा कोई हो जिसने कोई न कोई अपना इस त्रासदी में ना खोया हो। इस भयानक विभिषिका के बावजूद विस्थापितों ने नए जीवन की शुरूआत की और शून्य से उठकर खुद को एक ब्रैंड बनाया। उन्होंने विभाजन के दौरान की कई भयावह कहानियों का जिक्र करते हुए बताया कि अचानक हंसते खेलते परिवार बर्बाद हो गए। मकान, दोस्त, रिश्ते सब छूट गए। लेकिन पूर्ण रूप से घटनाओं का डाक्यूमेंटेशन नहीं हुआ। उन्होंने भी कहा कि स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को इस संबंध में तथ्यपरक जानकारियां पढ़ाई जानी चाहिएं।

विशिष्ट अतिथि अनिल पांडेय ने कहा कि हमें इतिहास से जानना और सबक लेना चाहिए ताकि हम चुनौतियों का सामना कर सकें। ऐसे में विभाजन की विभिषिका की घटनाओं को भी जानना जरूरी है ताकि हम आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें। उन्होंने अपने पत्रकारिता के जीवन को याद किया और बताया कि उन्होंने बहुत सी कहानियों और संस्मरणों को रिकॉर्ड किया है, जो दिल को छू लेने वाली हैं। इस विभिषिका में एक अनुमान के अनुसार 10 से 20 लाख लोग मारे गए। एक लाख से अधिक महिलाएं गायब हो गई। लाखों बच्चों की हत्या हुई। इस बारे में सोचकर भी रूह कांपती है।

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष डा. किशनाराम बिश्नोई ने स्वागत संबोधन किया। उन्होंने कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी दी। धन्यवाद सम्बोधन डा. रामस्वरूप ने किया। इस अवसर पर डा. सच्चिदानंद जोशी द्वारा निर्मित बंटवारे की दास्तां नामक एक डॉक्यूमेंटरी तथा अनुराग पुनेठा द्वारा भारत पाकिस्तान विभाजन पर निर्मित एक लघु फिल्म भी दिखाई गई। मंच संचालन डा. गीतू धवन ने किया।

विभाजन विभिषिका के तथ्यों को पढ़ाया जाए

वक्ताओं ने कहा, भारत का विभाजन दुनिया की सबसे दुखद घटनाओं में से एक

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय में विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस पर मंगलवार को विभाजन विभिषिका के मानवीय पहलू विषय पर विचार गोष्ठी हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की, जबकि हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के कार्यकारी उपाध्यक्ष प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री मुख्य अतिथि रहे।

प्रो. अग्निहोत्री ने कहा कि विश्वविद्यालय में विभाजन की विभिषिका के तथ्यों को पढ़ाया जाना चाहिए। 1947 का भारत विभाजन दुनिया की सबसे दुखद और दर्दनाक घटनाओं में से एक है, लेकिन आज तक इसका सही डाक्यूमेंटेशन नहीं हुआ। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर लड़ा था, परंतु इसके बाद उन्हें अलग करने की राजनीति शुरू हुई। आजादी के समय अधिकतर मुसलमान भी बंटवारे के खिलाफ थे, इसलिए यह सोचने का विषय है कि विभाजन आखिर क्यों हुआ।

जीजेयू में विचार गोष्ठी में उपस्थित अतिथि एवं प्रतिभागी। स्रोत : विवि

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की गोष्ठी की अध्यक्षता

कुलपति प्रो. बिश्नोई ने कहा कि 15 अगस्त 1947 को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का जन्म हुआ, लेकिन इसी के साथ विश्व की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी भी घटी। लगभग 1.5 करोड़ लोग अपने ही वतन में शरणार्थी बन गए।

मुख्य वक्ता अनुराग पुनेठा ने कहा कि युवा पीढ़ी को विभाजन की सच्चाई जाननी चाहिए। विस्थापितों ने शून्य से शुरुआत कर नई पहचान बनाई, लेकिन उनके दर्द को सही रूप से दर्ज नहीं किया गया। विशिष्ट अतिथि अनिल पांडेय ने कहा कि इतिहास से सीख लेकर भविष्य की चुनौतियों का सामना करना जरूरी है। कार्यक्रम में डॉ. किशनाराम बिश्नोई ने स्वागत संबोधन किया और डॉ. रामस्वरूप ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्री कृष्ण एवं गुरु जंभेश्वर जी महाराज जन्मोत्सव एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम (सम्मेलन एवं यज्ञ)

दिनांक - 16 अगस्त,2025 **स्थान** - गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान परिसर

मुख्य यजमान - प्रो. नरसी राम बिश्नोई, माननीय कुलपति, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

अध्यक्षता - डॉ. विजय कुमार, कुलसचिव, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

निदेशक - प्रो. एन. के. बिश्नोई, अधिष्ठाता, धार्मिक अध्ययन संकाय

संयोजक - प्रो. किशनाराम बिश्नोई, विभागाध्यक्ष, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

आयोजन सचिव - डॉ. रामस्वरूप, सहायक प्रोफेसर, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

जीजेयू में मनाया भगवान श्रीकृष्ण गुरु जंभेश्वर महाराज का जन्मोत्सव

जीजेयू में हवन में आहुति देते कुलपति प्रो. नरसीराम बिश्नोई व अन्य। स्रोत : संस्थान

हिसार। गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय (जीजेयू) में गुरु जंभेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में भगवान श्रीकृष्ण एवं गुरु जंभेश्वर महाराज का जन्मोत्सव श्रद्धा, भक्ति और उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई एवं विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डॉ. वंदना बिश्नोई के द्वारा ध्वजारोहण कर समारोह का शुभारंभ किया गया। इसके बाद जम्भवाणी का सामूहिक पाठ किया गया।

इसके उपरांत वैदिक मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। मुख्य

वीसी नरसीराम बिश्नोई व वंदना बिश्नोई रहे यज्ञ के मुख्य यजमान

यजमान के रूप में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई एवं विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डॉ. वंदना बिश्नोई ने आहुति प्रदान कर कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की। जन्मोत्सव कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव डॉ. विजय कुमार ने की तथा यज्ञ का संचालन नेकीराम ने पूर्ण वैदिक विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. रामस्वरूप द्वारा किया गया। संवाद

विश्व बंधुत्व दिवस के अवसर पर

स्वामी विवेकानंद का वैश्विक योगदान विषय पर व्याख्यान का आयोजन।

गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

एवं

स्वामी विवेकानंद केंद्र, हिसार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन।

दिनांक - 11 सितंबर, 2025 **स्थान** - सीआरएस ऑडिटोरियम सेमिनार हॉल

निदेशक- प्रो. किशनाराम बिश्नोई, विभागाध्यक्ष, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

आयोजन सचिव - डॉ. रामस्वरूप, सहायक प्रोफेसर, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

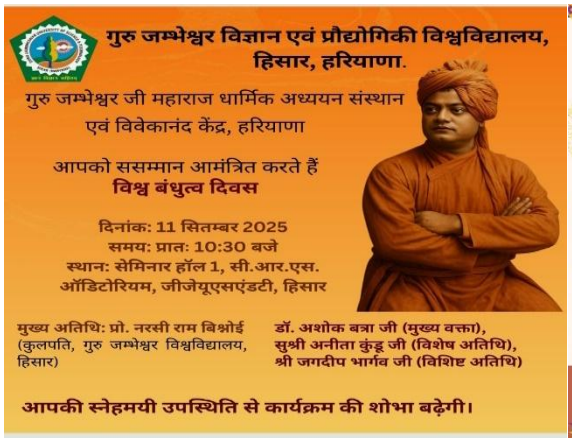

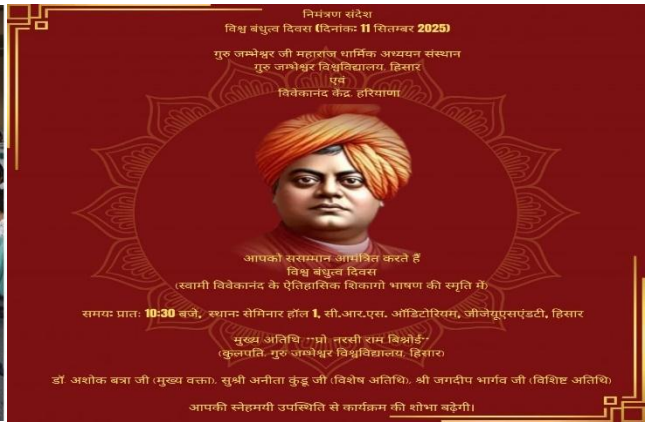

समाधान का मार्ग दिखाते हैं विवेकानंद के विचार

हिसार। गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय (जीजेयू) के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि धर्म, संप्रदाय और परंपराएं चाहे कितनी भी भिन्न हों, सभी का लक्ष्य मानवता और सत्य की खोज है। आज जब दुनिया अनेक संकटों, धार्मिक विद्वेष और प्रतिस्पर्धा से जूझ रही हैं, ऐसे में स्वामी विवेकानंद के विचार हमें समाधान का मार्ग दिखाते हैं।

कुलपति वीरवार को जीजेयू के गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान (जीजेएमआईआरएस) एवं विवेकानंद केंद्र, हरियाणा के सौजन्य से विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम में जीजेयू के कुलसचिव डॉ. विजय कुमार, विवेकानंद केंद्र हरियाणा के अध्यक्ष दशरथ चौहान, शिक्षाविद् एवं समाजसेवी जगदीप भार्गव, शिक्षाविद् डॉ. अशोक बत्रा, जीजेएमआईआरएस के अध्यक्ष प्रो. किशना राम बिश्नोई और विवेकानंद केंद्र, भिवानी के निदेशक लाल बहादुर शास्त्री भी मंच पर उपस्थित रहे।

कुलपति ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का संदेश है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, करुणा का विकास और राष्ट्र व मानवता की निस्वार्थ सेवा भी है। उन्होंने विद्यार्थियों को स्वामी विवेकानंद के शब्द 'उठो, जागो और लक्ष्य की प्राप्ति तक मत रुको' याद दिलाए तथा कहा कि यह वह मंत्र है, जो आपको साहस, करुणा और सेवाभाव से परिपूर्ण करेगा। मुख्य वक्ता डॉ. अशोक बत्रा ने स्वामी विवेकानंद के जीवन से जुड़े अधिकतर रोचक व दुर्लभ पहलुओं से अवगत करवाया।

जीजेयू में आयोजित कार्यक्रम में स्वामी विवेकानंद की वेशभूषा में छात्र प्रिंस को सम्मानित करते कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई व अतिथि। स्रोत : संस्थान

विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य पर समारोह का आयोजन

स्वामी विवेकानंद के विचार हमें दिखाते समाधान का मार्ग

स्वामी विवेकानंद के जीवन पर डाला प्रकाश, वैश्विक स्तर पर मजबूत बनने का किया आह्वान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि धर्म, सम्प्रदाय और परम्पराएं चाहे कितनी भी भिन्न हो, सभी का लक्ष्य मानवता और सत्य की खोज है। आज जब दुनिया अनेक संकटों, धार्मिक विद्वेष और प्रतिस्पर्धा से जूझ रही है, ऐसे में हमें स्वामी विवेकानंद जी के विचार हमें समाधान का मार्ग दिखाते है।

हम सभी का लक्ष्य मानवता और सत्य की खोज है

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान एवं विवेकानंद केन्द्र, हरियाणा के सौजन्य से विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे।

11 सितम्बर 1893 को स्वामी विवेकानंद जी द्वारा शिकागो में दिए गए ऐतिहासिक संबोधन के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम में गुजवि के कुलसचिव डा. विजय कुमार, विवेकानंद केन्द्र हरियाणा के अध्यक्ष दशरथ चौहान, शिक्षाविद् एवं समाजसेवी जगदीप भार्गव, शिक्षाविद् डा. अशोक बतरा, संस्थान के अध्यक्ष प्रो. किशना राम बिश्नोई तथा विवेकानंद केंद्र, भिवानी के निदेशक लाल बहादुर शास्त्री भी मंच पर उपस्थित रहे।

हिसार। कार्यक्रम का उद्घाटन करते कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई।

तकनीक मे और तेजी से आगे बढ़ना होगा

मुख्य वक्ता डा. अशोक बत्रा ने अपने संबोधन में स्वामी विवेकानंद जी के जीवन से जुड़े अधिकतर रोचक व दुर्लभ पहलुओं से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि हमें वैश्विक स्तर पर मजबूत बनना है, तो तकनीक में और तेजी से आगे बढ़ना होगा। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी की तरह हमें प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि से अहंकारी नहीं होना है, बल्कि देश को विकास के पथ पर ले जाने के लिए निरंतर कार्य करना है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद जी के विश्व धर्म सम्मेलन में जाने से संबंधित चुनौतियों के बारे में भी बताया।

प्रिंस ने सुनाया स्वामी विवेकानंद का भाषण

आयोजन में विद्यार्थी प्रिंस ने शिकागो में दिए गए स्वामी विवेकानंद जी के भाषण को अत्यंत शानदार व भावपूर्ण तरीके से पूरा सुनाया।

धन्यवाद सम्बोधन प्रो. किशना राम बिश्नोई ने दिया। कार्यक्रम के संयोजक डा. बिजेन्द्र पाल सैनी ने अपने स्वागत सम्बोधन में अतिथिगण का परिचय कराया। कार्यक्रम के सह-संयोजक डा. देवेन्द्र ने विवेकानंद केन्द्र की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

हिसार। प्रदर्शनी का अवलोकन करते डॉ. वंदना बिश्नोई। फोटो: हरिभूमि

भारतीय युवाओं की बहुमुखी प्रतिभा वैश्विक स्तर पर बना चुकी अपनी पहचान : डॉ. बिश्नोई

- गुजवि के वाणिज्य विभाग द्वारा की ओर से 'कॉमफेस्ट' आयोजित
- आरती व पलक की आर्ट एंड क्राफ्ट को पहला स्थान

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डॉ. वंदना बिश्नोई ने कहा है कि वर्तमान युवा केवल शैक्षणिक रूप से ही नहीं, बल्कि व्यवहार और सामाजिक दृष्टिकोण से भी भविष्य के लीडर बनने की क्षमता रखते है। युवाओं की इसी नेतृत्व क्षमता के दम पर भारत वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के सपने को साकार कर लेगा। भारतीय युवाओं की बहुमुखी प्रतिभा वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है। प्रो. वंदना बिश्नोई विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग की ओर से आयोजित 'कॉमफेस्ट' के उद्घाटन समारोह को मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रही थी। विभाग के वाणिज्य कक्षा के बैनर तले हुए इस आयोजन में विद्यार्थियों ने प्रबंधन व कौशल कला का जबरदस्त प्रदर्शन किया।

धर्म, सम्प्रदाय और परम्पराएं चाहे कितनी भी भिन्न हों, सबका लक्ष्य मानवता व सत्य की खोज है : प्रो. बिश्नोई

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि धर्म, सम्प्रदाय और परम्पराएं चाहे कितनी भी भिन्न हों, सभी का लक्ष्य मानवता और सत्य की खोज है। आज जब दुनिया अनेक संकटों, धार्मिक विद्वेष और प्रतिस्पर्धा से जूझ रही है, ऐसे में हमें स्वामी विवेकानंद जी के विचार हमें समाधान का मार्ग दिखाते हैं।

प्रो. नरसी राम बिश्नोई गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान एवं विवेकानंद केन्द्र, हरियाणा के सौजन्य से विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। 11 सितम्बर 1893 को स्वामी विवेकानंद जी द्वारा शिकागो में दिए गए ऐतिहासिक संबोधन के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम में गुजविप्रौवि के कुलसचिव डा. विजय कुमार, विवेकानंद केन्द्र हरियाणा के अध्यक्ष दशरथ चौहान, शिक्षाविद् एवं समाजसेवी जगदीप भार्गव, शिक्षाविद् डा. अशोक बतरा, जीजेएमआईआरएस के अध्यक्ष प्रो. किशना राम बिश्नोई तथा विवेकानंद केंद्र, भिवानी के निदेशक लाल बहादुर शास्त्री भी मंच पर उपस्थित रहे।

प्रो. बिश्नोई ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का संदेश है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, करुणा का विकास और राष्ट्र व मानवता की निस्वार्थ सेवा भी है। गुजविप्रौवि स्वामी विवेकानंद के इस संदेश को अपनाते हुए विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। हम मानते हैं कि शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में भाईचारे, सहयोग और मानवता की भावना को बढ़ाना भी है। उन्होंने विद्यार्थियों को स्वामी विवेकानंद जी के शब्द उठो, जागो और लक्ष्य की प्राप्ति तक मत रुको याद दिलाए तथा कहा कि यह वह मंत्र है, जो आपको साहस, करुणा और सेवाभाव से परिपूर्ण करेगा। उन्होंने इस अवसर पर बताया कि गुजविप्रौवि ने 30 वर्ष से भी कम समय में जबरदस्त प्रतिष्ठा अर्जित की है। विश्वविद्यालय ने एनआईआरएफ 2025 में राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालय श्रेणी में भारत में 32वां और हरियाणा राज्य में पहला स्थान पाया है।

मुख्य वक्ता डा. अशोक बत्रा ने स्वामी विवेकानंद जी के जीवन से जुड़े अधिकतर रोचक व दुर्लभ पहलुओं से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि हमें वैश्विक स्तर पर मजबूत बनना है, तो तकनीक में और तेजी से आगे बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी की तरह हमें प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि से अहंकारी नहीं होना है, बल्कि देश को विकास के पथ पर ले जाने के लिए निरंतर कार्य करना है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद जी के विश्व धर्म सम्मेलन में जाने से संबंधित चुनौतियों के बारे में भी बताया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी - एकात्म मानववाद और राष्ट्र निर्माण

दिनांक - 24 सितम्बर, 2025 **स्थान** - सीआरएस ऑडिटोरियम, सेमिनार हॉल

मुख्य अतिथि - डॉ. महेश चंद्र शर्मा, अध्यक्ष, एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास परिषद, नई दिल्ली

मुख्य वक्ता- श्री अतुल जैन, उपाध्यक्ष, दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली

अध्यक्षता - प्रो. नरसी राम बिश्नोई, माननीय कुलपति, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

संयोजक - प्रो. किशनाराम बिश्नोई, विभागाध्यक्ष, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

आयोजन सचिव - डॉ. रामस्वरूप, सहायक प्रोफेसर, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्र निर्माण प्रत्येक नागरिक की सक्रिय सहभागिता से ही संभव है

एजेंसी ■ हिसार

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार (गुजविप्रौवि) के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के तत्वावधान में बुधवार को एकात्म मानवदर्शन और भारतीय संस्कृति विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास संस्थान, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. महेश चंद्र शर्मा संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान, नई दिल्ली के महासचिव अतुल जैन मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि डॉ. महेश चंद्र शर्मा ने कहा कि राष्ट्र निर्माण केवल शासन व्यवस्था या नीतियों के बल पर नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक की सक्रिय सहभागिता से ही संभव है।

मुख्य वक्ता अतुल जैन ने एकात्म मानवदर्शन की समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा केवल जानकारी अर्जित करने का साधन भर नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र जीवन को ऊर्जा देने और मानवता को दिशा देने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि गुजविप्रौवि भारतीय परंपरा और आधुनिक विज्ञान के समन्वय से समाज और राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए कटिबद्ध है। विभागाध्यक्ष प्रो. किशना राम बिश्नोई, डा. राम स्वरूप व प्रो.अरुणेश कुमार भी मंच पर उपस्थित रहे।

राष्ट्र निर्माण केवल शासन व्यवस्था या नीतियों के बल पर नहीं, समाज के प्रत्येक नागरिक की सक्रिय सहभागिता से ही संभव : डा.महेश चंद्र

संगोष्ठी में मुख्यातिथि डा. महेश चंद्र शर्मा को सम्मानित करते कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई।

हिसार, 24 सितंबर (ब्यूरो) : गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के तत्वावधान में बुधवार को एकात्म मानवदर्शन और भारतीय संस्कृति विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास संस्थान, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. महेश चंद्र शर्मा संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की।

मुख्य अतिथि डा. महेश चंद्र शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्र निर्माण केवल शासन व्यवस्था या नीतियों के बल पर नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक की सक्रिय सहभागिता से ही संभव है। उन्होंने दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को उद्धृत करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति व्यक्ति, समाज और प्रकृति इन तीनों के बीच संतुलन स्थापित करने का संदेश देती है।

मुख्य वक्ता अतुल जैन ने एकात्म मानवदर्शन की समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्ति तक सीमित नहीं होना चाहिए। इसका मूल ध्येय जीवन मूल्यों, नैतिक चेतना और राष्ट्रीय गौरव को विकसित करना है।

संगोष्ठी के समापन सत्र में धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अरुणेश कुमार ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डा. गीतू प्रभारी हिंदी विभाग एवं डॉ. पल्लवी ने संयुक्त रूप से किया।

इधर... एकात्म मानव दर्शन पर एक दिवसीय गोष्ठी

हिसार | जीजेयू के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के तत्वावधान में बुधवार को एकात्म मानव दर्शन और भारतीय संस्कृति विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की गई। एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास संस्थान, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. महेश चंद्र शर्मा संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जीजेयू के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान, नई दिल्ली के महासचिव अतुल जैन मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान व जियो गीता ज्ञान संस्थानम् , कुरुक्षेत्र के साथ एमओयू

भगवद् गीता में डिप्लोमा पाठ्यक्रम आरम्भ।

डिप्लोमा कोर्स ओनलाइन, अवधि - एक वर्ष (दो सेमेस्टर)

डिप्लोमा समन्वयक - डॉ. रामस्वरूप, सहायक प्रोफेसर, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

शिक्षा व आध्यात्मिक क्षेत्र में करेंगे काम

जीजेयू और जियो गीता रिसर्च इंस्टीट्यूट कुरुक्षेत्र के बीच एमओयू

संवाद न्यूज एजेंसी

जीजेयू के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई और जियो गीता रिसर्च इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष डॉ. तरुण एमओयू का आदान-प्रदान करते हुए साथ में विवि के प्रोफेसर। फोटो : संवाद

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय (जीजेयू) और जियो गीता रिसर्च इंस्टीट्यूट, गीता ज्ञान संस्थानम, कुरुक्षेत्र (जियो गीता) शिक्षा व अध्यात्म के क्षेत्र में मिलकर कार्य करेंगे। इस संबंध में दोनों संस्थानों ने एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं।

जीजेयू की ओर से कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई और जियो गीता की ओर से अध्यक्ष डॉ. तरुण ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए। जीजेयू के कुलसचिव डॉ. विजय कुमार, डीन इंटरनेशनल अफेयर्स प्रो. नमिता सिंह, गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष प्रो. किशना राम व सहायक प्रो. डॉ. रामस्वरूप ने गवाह के रूप में हस्ताक्षर किए। धार्मिक अध्ययन संकाय के अधिष्ठाता प्रो. एनके बिश्नोई भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

कुलपति ने कहा कि यह एमओयू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों व शिक्षकों के लिए लाभदायक होगा। इस एमओयू के माध्यम से जीजेयू और जियो गीता के बीच सहयोग युवा विकास गतिविधियों के क्षेत्र में केंद्रित होगा। दोनों संस्थान भगवद् गीता पर शैक्षणिक कार्यक्रम शुरू करेंगे जैसे कि सर्टिफिकेट कोर्स, डिप्लोमा इन कोर्स, दूरस्थ/भौतिक मोड में स्व-वित्तपोषण योजना के तहत यूजी और पीजी कार्यक्रम।

अध्यक्ष डॉ. तरुण ने कहा कि जियो गीता (भगवद गीता का वैश्विक प्रेरणा ज्ञान संगठन) की एक इकाई जियो गीता अनुसंधान संस्थान, गीता ज्ञान संस्थानम, कुरुक्षेत्र भारत में हजारों विद्यार्थियों को आध्यात्मिक, मूल्य और सांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने में लगा हुआ है।

भगवद गीता पर शैक्षणिक कार्यक्रम शुरु करेगा गुजवि, एमओयू पर किए हस्ताक्षर

नभ-छोर न्यूज ▸▸ 07 सितंबर

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय तथा जियो गीता रिसर्च इंस्टीट्यूट, गीता ज्ञान संस्थानम, कुरुक्षेत्र शिक्षा तथा अध्यात्म के क्षेत्र में मिलकर कार्य करेंगे। इस संबंध में दोनों संस्थानों ने एक मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। गुजवि की ओर से कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई और जियो गीता की ओर से अध्यक्ष डॉ. तरूण ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए। कुलसचिव डॉ. विजय कुमार, डीन इंटरनेशनल अफेयर्स प्रो. नमिता सिंह, गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष प्रो. किशना राम तथा सहायक प्रो. डॉ. रामसरूप ने गवाह के रूप में हस्ताक्षर किए। धार्मिक अध्ययन संकाय के अधिष्ठाता प्रो. एनके बिश्नोई भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बिश्नोई ने कहा कि यह एमओयू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों व शिक्षकों के लिए लाभदायक होगा। इस एमओयू के माध्यम से गुजवि तथा जियो गीता के बीच सहयोग युवा विकास गतिविधियों के क्षेत्र में केंद्रित होगा। इसमें कालातीत आध्यात्मिकता और ज्ञान के अनुसार विशेष शिक्षा को बढ़ावा देना, शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के बीच व्यक्तित्व और दृष्टिकोण को निखारना शामिल हैं, जिससे उन्हें चरित्र और क्षमता विकसित करने, नेतृत्व गुणों का निर्माण करने, तनाव प्रबंधन और जीवनशैली प्रबंधन जैसे कौशल से सशक्त बनाने और लोगों को आत्म-विनाशकारी आदतों से बचाने और एक सार्थक जीवन जीने में मदद मिल सके। दोनों संस्थान भगवद गीता पर शैक्षणिक कार्यक्रम शुरू करेंगे जैसे कि सर्टिफिकेट कोर्स, डिप्लोमा इन कोर्स, दूरस्थ/भौतिक मोड में स्व-वित्तपोषण योजना के तहत यूजी और पीजी कार्यक्रम। अध्यक्ष डॉ. तरुण ने कहा कि जियो गीता (भगवद गीता का वैश्विक प्रेरणा ज्ञान संगठन) की एक इकाई जियो गीता अनुसंधान संस्थान, गीता ज्ञान संस्थानम, कुरुक्षेत्र भारत में हजारों विद्यार्थियों को आध्यात्मिक, मूल्य और सांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने में लगा हुआ है। कुलसचिव डॉ. विजय कुमार ने कहा कि यह एमओयू दोनों संस्थानों के संसाधनों के अधिक प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देगा और प्रत्येक को बेहतर अवसर प्रदान करेगा। इस अवसर पर ओडीएल केंद्र के निदेशक प्रो. खुजान सिंह व प्रो. अर्चना कपूर भी उपस्थित रहे।

ANNEXURE

PROGRAMME PROJECT REPORT

OF

DIPLOMA IN BHAGVAD GITA

ONE YEAR (TWO SEMESTER) PROGRAMME

Choice Based Credit System on Outcome Based Education

(Effective from Session 2025-26)

CENTRE FOR DISTANCE AND ONLINE EDUCATION

GURU JAMBHESHWAR UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
HISAR-125001, HARYANA
In collaboration with
GIEO GITA RESDEARCH INSTITUTE, KURUKSHETRTA, HARYANA

(YEAR: 2025-26)

5.1 CURRICLUM DESIGN

The Diploma in Bhagvad Gita: Your Guide to Success and Inner Peace is a one-year programme divided into two semesters. The course structure, viz, the scheme and syllabus of the Diploma in Bhagvad Gita is given as under:

Scheme of *Diploma in Bhagvad Gita 2025-26*

Semester-1

Paper Code	Nomenclature of Paper	Credits	Internal Marks	External Marks	Maximum Marks
DBG101	महाभारत ग्रन्थ का परिचय एवं पृष्ठ भूमि	4	30	70	100
DBG102	भगवद् गीता का क्रमिक विकास	4	30	70	100
DBG103	भगवद् गीता की विषय वस्तु	4	30	70	100
DBG104	क्यों पढ़े भगवद् गीता	4	30	70	100
DBG105	प्रयोगात्मक एवं प्रस्तुतिकरण-I	4	30	70	100
	Total	20	150	350	500

Semester-II

Paper Code	Nomenclature of Paper	Credits	Internal Marks	External Marks	Maximum Marks
DBG201	गीता की सार्वभौमिक प्रासंगिकता	4	30	70	100
DBG202	कर्म मीमांसा (गीता के संदर्भ में)	4	30	70	100
DBG203	भगवद् गीता में मनोविज्ञान	4	30	70	100
DBG204	भगवद् गीता में मनोचिकित्सा	4	30	70	100
DBG205	प्रयोगात्मक एवं प्रस्तुतिकरण-II	4	30	70	100
	Total	20	150	350	500
	Grand Total	40	300	700	1000

Note: To be eligible for the award of the Diploma in Bhagvad Gita, a student has to complete all the 10 courses as shown in the table. However, a candidate can take exit option after 6 months (Semester 1) and upon successful completion, he/she will get Certificate in Bhagvad Gita. The question papers for the final examination will be objective type.

द्विदिवसीय प्रदर्शनी - भारत के विश्व शक्ति बनने की यात्रा

दिनांक -16-17 सितंबर,2025 **स्थान** - सीआरएस ऑडिटोरियम, क्रश हॉल ,गुजविप्रौवि, हिसार

आयोजक - वाणिज्य संकाय

भारतीय पुनरुत्थान : नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण और भारतीय ज्ञान परम्परा का उत्थान

(डॉ. रामस्वरूप, सहायक प्रोफेसर)

. भारत की सांस्कृतिक चेतना और बौद्धिक धरोहर का गौरवशाली प्रतीक नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन काल में विश्व का सबसे बड़ा शिक्षा केन्द्र था। यहाँ हजारों विद्यार्थी और आचार्य विभिन्न विषयों में उच्च अध्ययन करते थे। यह केवल ज्ञान का भंडार नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन, संस्कृति और सभ्यतागत आत्मा का प्रकाश-स्तम्भ था। दुर्भाग्यवश आक्रमणों के कारण इसका विनाश हुआ और यह धरोहर लम्बे समय तक विस्मृति में रही। 21वीं सदी में नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण भारतीय पुनरुत्थान की दिशा में ऐतिहासिक उपलब्धि है। इसके नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन मात्र एक भवन का उद्घाटन नहीं, बल्कि यह भारत की प्राचीन ज्ञान परम्परा और सभ्यतागत गौरव के पुनर्जागरण का प्रतीक है। इस उपलब्धि के कुछ प्रमुख आयाम इस प्रकार है-

1. सभ्यतागत पुनर्जागरण – नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण यह घोषणा करता है कि भारत अपनी प्राचीन बौद्धिक धरोहर को आधुनिक सन्दर्भों में पुनः प्रतिष्ठित कर रहा है।

2. अंतरराष्ट्रीय बौद्धिक केन्द्र – यह विश्वविद्यालय लगभग 40 देशों की सहभागिता के साथ वैश्विक स्तर पर एशियाई परम्परा और ज्ञान का केन्द्र बन रहा है।

3. आधुनिकता और परम्परा का समन्वय – यहाँ प्राचीन भारतीय विद्या के साथ विज्ञान, पर्यावरण, प्रौद्योगिकी और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की शिक्षा एकीकृत रूप में प्रदान की जा रही है।

4. सांस्कृतिक कूटनीति का केन्द्र – यह विश्वविद्यालय भारत की सॉफ्ट पावर का प्रतीक बनकर विश्व के बौद्धिक आदान-प्रदान को नई दिशा दे रहा है।

नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण और भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ी विविध पहलें आधुनिक भारत के सभ्यतागत पुनरुत्थान की प्रतीक है। यह न केवल अतीत की गौरवगाथा को वर्तमान में पुनर्जीवित करती है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को यह संदेश भी देती है कि भारत अपनी जड़ों से जुड़कर ही विश्व के पथप्रदर्शक की भूमिका निभा सकता है।

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
हिसार
('A+' Grade NAAC Accredited)
दो दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन
भारतीय पुनर्जागरण में एक दशक का
अद्भुत अविस्मरणीय योगदान
भारत के वैश्विक शक्ति बनने की यात्रा
(विकसित भारत की ओर बढ़ते कदम)
मुख्य अतिथि
प्रो. बलदेव भाई शर्मा
पूर्व कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे विश्वविद्यालय
रायपुर (छत्तीसगढ़)
अध्यक्षता
प्रो. नरसीराम बिश्नोई
कुलपति
गुजविप्रौवि, हिसार
विशिष्ट अतिथि
डॉ. रीता सिन्हा
एसोसिएट प्रो. इग्नू, दिल्ली
16-17 सितम्बर, 2025 | 10:00 AM
क्रश हॉल, सी.आर.एस. ऑडिटोरियम, जीजेयूएसटी, हिसार
आयोजक
वाणिज्य विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

राम मंदिर:
और श्रद्धा का

संगोष्ठी का विषय: हिंदी और भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता

राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य : विभागाध्यक्ष द्वारा प्रस्तुत

दिनांक -16 सितंबर, 2025

आयोजन: हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में
आयोजक: हिंदी विभाग

हिंदी और भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता पर आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य भाषा और संस्कृति के अद्वितीय संबंधों को उजागर करना, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं के संरक्षण में हिंदी की भूमिका पर विचार विमर्श करना और भाषा-संस्कृति के क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना को प्रोत्साहित करना है।

इस संगोष्ठी में विभागाध्यक्ष प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने मुख्य रूप से संगोष्ठी का उद्देश्य प्रस्तुत किया। उन्होंने हिंदी भाषा के महत्व, भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता में इसकी भूमिका और समाज में इसके योगदान पर विस्तृत प्रकाश डाला।

विचार गोष्ठी - भारतीय संस्कृति के आदि कवि : महर्षि वाल्मीकि

दिनांक : 09 अक्टूबर, 2025

गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान एवं हिन्दी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन

मुख्य अतिथि : प्रो. राकेश कुमार बहमनी

अध्यक्षता : प्रोफेसर किशनाराम बिश्नोई

विशिष्ट अतिथि : प्रो. अरुणेश कुमार, श्री दीपक कुमार

संयोजक : डॉ. रामस्वरूप, असिस्टेंट प्रोफेसर, गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

कार्यक्रम भारतीय संस्कृति के आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के जीवन दर्शन पर विचार गोष्ठी

गोष्ठी में संस्कृत स्नातकोत्तर की छात्राओं ने शोध प्रस्तुत किए

महर्षि वाल्मीकि का साहित्य सत्य और धर्म के समन्वय का प्रतीक : प्रो. बहमनी

हिसार। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के जीवन दर्शन पर हुई विचारगोष्ठी में उपस्थित अतिथिगण एवं प्रतिभागी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान एवं हिन्दी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में 'भारतीय संस्कृति के आदिकवि : महर्षि वाल्मीकि' विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने की।

वाल्मीकि ने भारतीय काव्य परंपरा की नींव रखी

मुख्य अतिथि के रूप में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. राकेश कुमार बहमनी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रो. अरुणेश कुमार, शिक्षा संकाय की अधिष्ठाता प्रो. वंदना पूनिया एवं दीपक कुमार उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि प्रो. बहमनी ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि ने भारतीय काव्य परंपरा की नींव रखी। उनका साहित्य सत्य, करुणा और धर्म के समन्वय का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि महर्षि वाल्मीकि की काव्य चेतना आज भी समाज को सत्य और सदाचार के मार्ग पर प्रेरित करती है। गोष्ठी में संस्कृत स्नातकोत्तर की छात्राओं मनीषा, रेनू व रिंकु ने महर्षि वाल्मीकि के कृतित्व और विचारों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. गीतू, प्रभारी, हिन्दी विभाग द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. शर्मिला, डॉ. कल्पना, डॉ. रामस्वरूप, डॉ. इंदुबाला आदि उपस्थित रहे।

नवप्रवेशित विद्यार्थियों का अभिनंदन कार्यक्रम

कार्यक्रम के संयोजक : डॉ. रामस्वरूप, असिस्टेंट प्रोफेसर

आयोजन सचिव : डॉ. इंदु बाला, सहायक प्रोफेसर

दिनांक 16 अक्टूबर, 2025

गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान द्वारा सत्र 2025-26 में संस्कृत स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के स्वागतार्थ अभिनंदन एवं परिचय कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 16 अक्टूबर, 2025 को विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी विभाग के सभागार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के विभागाध्यक्ष प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने की। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संस्कृत ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति की गहराई को समझना संभव नहीं। यह भाषा हमारे दर्शन, साहित्य, विज्ञान और नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। संस्कृत का अध्ययन व्यक्ति में वैचारिक अनुशासन, बौद्धिक स्पष्टता और सांस्कृतिक चेतना का विकास करता है।

प्रो. बिश्नोई ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान संस्कृत की परंपरा और आधुनिक दृष्टि के समन्वय का केंद्र है, यहां विद्यार्थियों को भाषा के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापक दृष्टि से भी परिचित कराया जाता है। स्नातकोत्तर के विद्यार्थी रीया खटाना एवं रोहित ने कुशलतापूर्वक संयोजन किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने भी अपने विचार रखे और संस्कृत के प्रति अपनी रुचि व्यक्त की। कार्यक्रम का सफल संचालन शांतिपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में हुआ। नवप्रवेशित विद्यार्थियों ने विभागीय शिक्षकों के मार्गदर्शन में संस्कृत के अध्ययन को जीवन का गौरवपूर्ण अध्याय मानने का संकल्प व्यक्त किया।

संस्कृत का ज्ञान संस्कृति का आधार : प्रो. किशनाराम

जासं ● हिसार : गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में संस्कृत स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर के नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के विभागाध्यक्ष प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने की। प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने कहा कि संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संस्कृत ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति की गहराई को समझना संभव नहीं है।

संस्कृत का ज्ञान संस्कृति का आधार: प्रो. किशनाराम बिश्नोई

नभ-छोर न्यूज ▶▶| 18 अक्टूबर

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में संस्कृत स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर के नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के विभागाध्यक्ष प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने की। प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने कहा कि संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संस्कृत ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति की गहराई को समझना संभव नहीं। यह भाषा हमारे दर्शन, साहित्य, विज्ञान और नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। संस्कृत का अध्ययन व्यक्ति में वैचारिक अनुशासन, बौद्धिक स्पष्टता और सांस्कृतिक चेतना का विकास करता है। प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान संस्कृत की परंपरा और आधुनिक दृष्टि के समन्वय का केंद्र है। यहां विद्यार्थियों को भाषा के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापक दृष्टि से भी परिचित कराया जाता है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. रामस्वरूप एवं आयोजन सचिव के रुप में सहायक प्रोफेसर डॉ. इंदु बाला ने भूमिका निभाई। स्नातकोत्तर के विद्यार्थी रीया खटाना एवं रोहित ने कुशलतापूर्वक संयोजन किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने भी अपने विचार रखे और संस्कृत के प्रति अपनी रुचि व्यक्त की

संस्कृत का ज्ञान संस्कृति का आधार : प्रो. किशनाराम बिश्नोई

गुजवि में नए विद्यार्थियों के लिए अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में संस्कृत स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर के नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के विभागाध्यक्ष प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने की।

प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने अपने उद्बोधन में कहा कि संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संस्कृत ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति की गहराई को समझना संभव नहीं। यह भाषा हमारे दर्शन, साहित्य, विज्ञान और नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। संस्कृत का अध्ययन व्यक्ति में वैचारिक अनुशासन, बौद्धिक स्पष्टता और सांस्कृतिक चेतना का विकास करता है।

प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान संस्कृत की परंपरा और आधुनिक दृष्टि के समन्वय का केंद्र है। यहां विद्यार्थियों को भाषा के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापक दृष्टि से भी परिचित कराया जाता है।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. रामस्वरूप एवं आयोजन सचिव के रुप में सहायक प्रोफेसर डॉ. इंदु बाला ने भूमिका निभाई। स्नातकोत्तर के विद्यार्थी रीया खटाना एवं रोहित ने संयोजन किया। विद्यार्थियों ने भी अपने विचार रखे और संस्कृत के प्रति अपनी रुचि व्यक्त की। नवप्रवेशित विद्यार्थियों ने विभागीय शिक्षकों के मार्गदर्शन में संस्कृत के अध्ययन को जीवन का गौरवपूर्ण अध्याय मानने का संकल्प व्यक्त किया।

गुजवि के गणित विभाग ने मनाया विश्व सांख्यिकी दिवस

पांच बजे न्यूज

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के गणित विभाग में विश्व सांख्यिकी दिवस के उपलक्ष्य पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दो रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस वर्ष की इस दिवस की थीम 'क्वालिटी स्टेटिसटिक्स एंड डेटा फॉर एवरीवन' है । इस अवसर पर विद्यार्थियों छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपने सांख्यिकी ज्ञान का प्रदर्शन किया।विभागाध्यक्ष प्रो. मुकेश शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान पोस्टर प्रस्तुति और डेक्लामेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी विश्लेषणात्मक और समस्या-समाधान कौशल का प्रदर्शन किया। उन्होंने विद्यार्थियों की प्रतिभा की सराहना की।

कार्यक्रम के अंत में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया और उन्हें आगे सांख्यिकी में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर विभाग के शिक्षक प्रो. सुनीता पन्नू, प्रो. सुनीता रानी, प्रो. पंकज, प्रो. कपिल कुमार, डा. रेणु, डा. सुनीता रानी, डा. पूनम, डा. हीना, डा. प्रियंका और डा. निशा सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

संस्कृत का ज्ञान संस्कृति का आधार : प्रो. बिश्नोई

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में संस्कृत स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर के नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के विभागाध्यक्ष प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने की।

प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने अपने उद्बोधन में कहा कि संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संस्कृत ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति की गहराई को समझना संभव नहीं। यह भाषा हमारे दर्शन, साहित्य, विज्ञान और नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। संस्कृत का अध्ययन व्यक्ति में वैचारिक अनुशासन, बौद्धिक स्पष्टता और सांस्कृतिक चेतना का विकास करता है।प्रो. किशनाराम बिश्नोई ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान संस्कृत की परंपरा और आधुनिक दृष्टि के समन्वय का केंद्र है। यहां विद्यार्थियों को भाषा के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापक दृष्टि से भी परिचित कराया जाता है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. रामस्वरूप एवं आयोजन सचिव के रुप में सहायक प्रोफेसर डॉ. इंदु बाला ने भूमिका निभाई। स्नातकोत्तर के विद्यार्थी रीया खटाना एवं रोहित ने कुशलतापूर्वक संयोजन किया।

एआईसीटीई अध्यक्ष प्रो. टी. जी. सीथाराम का विभाग में गरिमामय आगमन एवं शैक्षणिक संवाद

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (AICTE), नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. टी. जी. सीथाराम व निदेशक श्री कमलजीत सिंह का विभाग में आगमन अत्यंत प्रेरणादायी रहा। अपने दौरे के दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा विज्ञान, प्रौद्योगिकी और धर्म के समन्वय के माध्यम से ज्ञान के समग्र दृष्टिकोण को विकसित करने के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार में आध्यात्मिक मूल्य आधारित दृष्टि को अपनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि आधुनिक तकनीकी शिक्षा तभी सार्थक है जब उसमें मानवीय और नैतिक चेतना का समावेश हो। विभाग के प्राध्यापकों और शोधार्थियों से संवाद के दौरान प्रो. सीथारमन ने बहुविषयक अनुसंधान और सामाजिक उपयोगिता परक अध्ययन को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया। उनका यह भ्रमण विभाग के लिए मार्गदर्शक एवं प्रेरक सिद्ध हुआ।

think
you become.

गुजवि में नववर्ष पर हवन यज्ञ का आयोजन

पांच बजे न्यूज़

हिसार। गुजविप्रौवि परिसर में नववर्ष के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के सौजन्य से हुए इस हवन यज्ञ में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई व विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। हवन यज्ञ की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. विजय कुमार ने की। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के लिए सुख समृद्धि की कामना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि वर्ष 2026 विश्वविद्यालय के लिए नई ऊर्जा व स्फूर्ति लेकर आएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के सिद्धांतों पर चलते हुए निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कुलसचिव डा. विजय कुमार ने भी विश्वविद्यालय परिवार के लिए सुख समृद्धि व शांति की कामना की।

इस कार्यक्रम का आयोजन विभागाध्यक्ष प्रो. किशना राम बिश्नोई की देखरेख में हुआ। हवन यज्ञ का संचालन नेकी राम ने किया। इस अवसर पर वेदमयी वाणी तथा जम्भवाणी के मंत्रों का उच्चारण किया गया। हवन यज्ञ के उपरांत पौधारोपण भी किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संकायों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, अधिकारी, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

हिसार। नव वर्ष पर आयोजित हवन यज्ञ में उपस्थित कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई एवं विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई। *फोटोः हरिभूमि*

गुजवि में नववर्ष पर विश्वविद्यालय परिवार मिलन समारोह आयोजित

- कुलपति प्रो. बिश्नोई ने व्यक्तिगत रूप से मिलकर शिक्षकों व कर्मचारियों को शुभकामनाएं दीं

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के चौधरी रणबीर सिंह सभागार के सामने परिवार मिलन समारोह का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने व्यक्तिगत रूप से मिलकर शिक्षकों व कर्मचारियों को नववर्ष की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई व कुलसचिव डा. विजय कुमार भी उपस्थित रहे।कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के लिए सुख समृद्धि की कामना की। कार्यक्रम का आयोजन विभागाध्यक्ष प्रो. किशना राम बिश्नोई की देखरेख में हुआ। हवन यज्ञ का संचालन नेकीराम ने किया।

हवन यज्ञ का आयोजन

गुजवि परिसर में नववर्ष के पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के सौजन्य से हुए इस हवन यज्ञ में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई व विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। हवन यज्ञ की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. विजय कुमार ने की।

उपलब्धिः गुजवि छू रहा है नये आयामों को, बी.एस.सी. नर्सिंग तथा पोस्ट बेसिक बी.एस.सी. नर्सिंग कोर्स शुरू करने वाला बना पहला विश्वविद्यालयं

गुजविप्रौवि ड्रोन टेक्नोलॉजी, कृत्रिम बौद्धिकता, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा मेंटल हैल्थ एंड ह्यूमन वैल-बीग में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित करेगाः प्रो. नरसी राम बिश्नोई

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए।

हवन यज्ञ में उपस्थित कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई एवं विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई।

हिसार, 1 जनवरी (राहो): गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय निरंतर नए आयामों को छू रहा है। विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग और बेहतर हो रही है। विश्वविद्यालय द्वारा नए रोजगारपरक कोर्स शुरू किए जा रहे हैं। पैरामेडिकल कोर्सों में बी.एस.सी. नर्सिंग तथा पोस्ट बेसिक बी.एस.सी. नर्सिंग कोर्स शुरू करने वाला गुजविप्रौवि हरियाणा प्रदेश का पहला शैक्षणिक विश्वविद्यालय बन गया है।

विश्वविद्यालय शैक्षणिक सत्र 2026-27 में भी नए रोजगारपरक कोर्स आरंभ करने की योजना बना रहा है। विश्वविद्यालय आधुनिक मॉडल के आधार पर उद्योगों की मांग पर आधारित कोर्सों के साथ-साथ ड्रोन टेक्नोलॉजी, कृत्रिम बौद्धिकता, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा मेंटल हैल्थ एंड ह्यूमन वैल-बीग में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस भी स्थापित करेगा। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय पहचान को और अधिक मजबूत करने के लिए विश्व स्तरीय प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग बढ़ाया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति कार्यालय के कमेटी हॉल में पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि गुजविप्रौवि भविष्य में शिक्षा शोध नवाचार व सामाजिक दायित्वों को पूरा करने में न केवल भारत में बल्कि विश्व में अपनी पहचान को और अधिक मजबूत करेगा।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. विजय कुमार, डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. योगेश चाबा, तकनीकी सलाहकार प्रशासनिक प्रो. विनोद छोकर, तकनीकी सलाहकार एच.आर.एम. प्रो. संदीप राणा, डीन ऑफ कॉलेजिज प्रो. संजीव कुमार, डायरेक्टर पब्लिक आउटरीच एंड रिलेशंस प्रो. दलबीर सिंह व उपनिदेशक जनसम्पर्क डा. बिजेन्द्र दहिया उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बिश्नोई ने कहा कि विश्वविद्यालय ने गत दो शैक्षणिक सत्रों में 25 से अधिक स्नातक (अंडरग्रेजुएट) और स्नातकोत्तर (पोस्टग्रेजुएट) पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। विश्वविद्यालय द्वारा 21 ओडीएल तथा 40 ऑनलाइन कोर्स भी शुरू किए गए हैं। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या गत दो शैक्षणिक सत्रों में 5500 से बढ़कर 13000 हो गई है। इनमें 850 शोधार्थी हैं। विश्वविद्यालय की शोध तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता को देखते हुए प्रतिष्ठित फंडिंग एजेंसियों द्वारा रिसर्च प्रोजेक्टस दिए जा रहे हैं।

गुजविप्रौवि को राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा) के तहत प्रोजेक्ट मिले हैं। ग्लोबल इनिशिएटिव ऑफ एकेडमिक नेटवर्क्स (ज्ञान) कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय ने भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय को 25 प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए हैं। विश्वविद्यालय की दुनिया के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के साथ और अधिक सहयोग बढ़ाने की योजना के तहत ये प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए गए हैं। विश्वविद्यालय तथा प्रतिष्ठित विदेशी शिक्षण संस्थानों के शिक्षक व शोधार्थी आपस में एक दूसरे विश्वविद्यालय में जाकर शोध व शिक्षण कार्य कर सकेंगे। साथ ही दोनों संस्थान विद्यार्थियों को संयुक्त डिग्री व सर्टिफिकेट प्रदान करेंगे। कुलपति प्रो. बिश्नोई ने बताया कि विश्वविद्यालय का स्कोपस पब्लिकेशन 5700 तक पहुंच चुका है तथा साइटेशन 130000 पार कर चुका है। विश्वविद्यालय का एच.इंडेक्स भी 139 तक पहुंच चुका है, जो कि हरियाणा के सभी विश्वविद्यालयों से बेहतर है।

एन.ई.पी. 2020 के तहत नई पहल

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के वैश्विक स्तर पर बढ़ते महत्व के मद्देनजर गुजविप्रौवि ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में कई एआई बेस्ड (कौशल विकास पाठ्यक्रम) और मूल्य वृद्धि पाठ्यक्रम (वैल्यू इनहांसमेंट कोर्सिज-वीईसी) अनिवार्य रूप से जोड़ा गया है। इसका उद्देश्य युवाओं को बदलते युग की चुनौतियों के लिए तैयार करना है। एन.ई.पी. 2020 के क्रियान्वयन के चलते ही विश्वविद्यालय को उत्कृष्ट स्वर्ण पुरस्कार मिला है।

अप्रेंटिसशिप इन इम्बेडिड (डिप्लोमा एंड डिग्री) कोर्स शुरू होंगे

आधुनिक मॉडल के आधार पर उद्योगों की मांग पर आधारित कोर्सों के साथ-साथ ड्रोन टेक्नोलॉजी, कृत्रिम बौद्धिकता, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा मेंटल हैल्थ एंड ह्यूमन वैल-बीग में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस भी स्थापित करने के साथ-साथ विश्वविद्यालय आगामी सत्र से अप्रेंटिसशिप इन इम्बेडिड (डिप्लोमा एंड डिग्री) शुरू कर रहा है। ये कोर्स उद्योगों के सहयोग से संचालित किया जाएगा। विश्वविद्यालय द्वारा बी.एस.सी. क्लीनिकल साइकोलॉजी, बी.एस.सी. मेडिकल लेबोरेटरी टेक्नीशियन कोर्स के अतिरिक्त डिप्लोमा इन जेएनएसए आदि कोर्स भी शुरू किए जाएंगे।

इस दिशा में भी हो रहा है कार्य

विश्वविद्यालय का परिसर एनीमिया फ्री परिसर बनाया जा रहा है। विश्वविद्यालय परिसर स्वच्छ तथा हरित है। विश्वविद्यालय के दुर्लभ व विशेष गुणों वाले पौधों की जियो-टैगिंग भी होगी। विश्वविद्यालय में सिंगल यूज प्लास्टिक बैन है तथा परिसर कचरा मुक्त है। विश्वविद्यालय में धूम्रपान, शराब सेवन व अन्य किसी भी प्रकार के नशे पर पूर्णतया प्रतिबंध है।

नववर्ष के उपलक्ष्य पर विश्वविद्यालय परिवार मिलन समारोह

विश्वविद्यालय के चौधरी रणबीर सिंह सभागार के सामने परिवार मिलन समारोह का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने व्यक्तिगत रूप से मिलकर शिक्षकों व कर्मचारियों को नववर्ष की शुभकामनाएं दी तथा उनके परिवार के लिए सुख समृद्धि की कामना की। वहीं गुजविप्रौवि परिसर में नववर्ष के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के सौजन्य से हुए इस हवन यज्ञ में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई व विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। हवन यज्ञ का संचालन नेकी राम ने किया।

सुख-समृद्धि के लिए नववर्ष पर किया हवन

जागरण संवाददाता ● हिसार : गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय परिसर में नववर्ष के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान की ओर से हुए इस हवन यज्ञ में विवि के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई व विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। हवन यज्ञ की अध्यक्षता विवि के कुलसचिव डा. विजय कुमार ने की। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने इस अवसर पर विवि परिवार के लिए सुख समृद्धि की कामना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि वर्ष 2026 विवि के लिए नई ऊर्जा व स्फूर्ति लेकर आएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय गुरु जंभेश्वर महाराज के सिद्धांतों पर चलते हुए निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कुलसचिव डा. विजय कुमार ने भी विश्वविद्यालय परिवार के लिए सुख समृद्धि व शांति की कामना की। इस कार्यक्रम का आयोजन विभागाध्यक्ष प्रो. किशना राम बिश्नोई की देखरेख में हुआ।

गुजवि में हवन यज्ञ में उपस्थित कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई एवं विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई ● जागरण